तृतीय अध्याय :

(ए) " रंगमंच की दृष्टि से "पृथ्वीराज" नाटक "

(पृथ्वीराज नाटक की रंगमंचियता)

प्रास्ताविक :

नाटक को प्रस्तुत करने मे रंगचंच का महत्त्व अधिक है। नाटक में प्राणों की प्रतिष्ठा तभी हो सकती है, जब वह रंगमंच पर खेला जाता है। अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा सामान्य व्यक्ति को आकर्षित करने में नाटक सफल कृति है , इसका एकमात्र कारण है उसका अभिनय, जो रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

सभी नाटक रंगमंच पर आज प्रदर्शित किये जा सकते हैं , लेकिन वही नाटक सफलता से रंगमंच पर प्रदर्शित किया जा सकता है , जिसमें लेखक ने रंगमंच की उपयुक्तता ध्यान मे रखकर सभी निर्देश दिये हों और दर्शक उसे देखकर नाटक की कथा में तन्मय हों। इसीलिए नाटक में प्रभावी अभिनय का होना आवश्यक है।

नाटककार का उद्देश्य उसके अभिनय द्वारा आसानी से सफल होता है। श्री बाजपेयी इस सम्बन्ध में लिखते है - " मानव चरित्र को शक्ति और गति देने में , सामुहिक प्रतिक्रिया और प्रेरणा उत्पन्न करने में,जीवन का निर्माण करने में, जितना कार्य अभिनेय नाटक कर सकता है, उतना दूसरी कोई कलाकृति नहीं।"[१]

नाटक की सफलता उसकी अभिनेयता पर निर्भर है। नाटक को रंगमंचपर सफलतासे खेलने के लिए नाटककार को नाटक की कथा, पात्र -योजना, कथोपकथन,

---

१) आलोचना - नाटक विशेषांक, सम्पादकीय पृष्ठ ४.

भाषाशैली आदि बातों की ओर ध्यान देना पडता है।

डॉ. रामगोपाल शर्मा " दिनेश " जी के " पृथ्वीराज नाटक का रंगमंच की दृष्टि से परीक्षण उपर्युक्त विशेषताओं के आधारपर करने से ही उसकी सफलता सिध्द हो सकती है।

<u>नाटक की कथा</u> :

रंगमंच की दृष्टि से एक सफल नाटक में जो विशेषताएँ होनी चाहिए वे सभी " पृथ्वीराज " नाटक में विद्यमान है। इसका कथानक अत्यंत संक्षिप्त और सुलझा हुआ है। रंगमंच की दृष्टि से वही नाटक सफल बताया जा सकता है, जिसकी कथा आसानी से दर्शक समझ सकें।

" पृथ्वीराज " नाटक की मुख्य कथा मेवाड के महाराणा रायमल के परिवार से संबंधित है। महाराणा रायमल युध्दविरोधी है, मेवाड चारो ओर संकटों से घिरा है। उनके तीनों पुत्र - संग्रामसिंह , पृथ्वीराज और जयमल उत्तराधिकारी बनने के इच्छुक है। सूरजमल फिरसे पिता का शासन प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। गोढ्वारमें दस्यु लोग अपने आपको स्वतंत्र घोषित करते है। राव सुरताण टोडा प्रदेश मे पराजित होकर महाराणा की शरण आया है। पृथ्वीराज अपनी शक्ति के बलपर, वीरता से उत्तराधिकार के परम्परागत नियम को तोडकर महारणा बनने का कार्य करता है। मेवाड के इस ऐतिहासिक घटना को लेकर नाटक की कथावस्तु है, जिसे रंगमंचपर सफलता से प्रस्तुत करने का प्रयास नाटककार ने किया है।

पृथ्वीराज नाटक की कथा तीन अंकों में विभाजित है। इनमें फिरसे क्रमशः पांच, सात और पांच दृश्य है। नाटक के यह कुल सत्रह दृश्य क्रमशः इस प्रकार है - लघु उपत्यका, विश्रामकक्ष, दुर्ग का पार्श्व भाग, बरगद के नीचे का मेला , जंगल, पहाडी स्थल, राजदरबार, सुरताण का भवन, पर्वतीय क्षेत्र,

जंगल , ओझा का मकान, राजा का विश्रामकक्ष, पगडंडी, राजदरबार , उपत्यका, पहाडी रास्ता और सरिता तट। इनमें से पहला और पन्द्रहवां दृश्य , दूसरा और बारहवां, छठा और नौवा दृश्य समान ही है। अर्थात इस नाटक को रंगमंचपर प्रस्तुत करने के लिए १४ दृश्यों की आवश्यकता है। नाटककार रंगमंच की सुविधा के अनुरूप दृश्य योजना करता है। दृश्य योजना में स्वाभाविकता लाने के लिय नाटककार को रंगमंच सम्बन्धी निर्देश देना पडता है, जो डॉ. दिनेश ने हर दृश्य के प्रारंभ में स्पष्ट रूप से दिये है।

" नाटक में दृश्यों की संख्या कितनी रहे, इस संबंध में कोई नियम नहीं हो सकता, क्योकि यह नाटक के कथानक आदि पर निर्भर है , पर यदि किसी अंकमें अधिक दृश्य रहे, तो उन्हें छोटे रखना आवश्यक है। साथ ही उनकी व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि उनके परिवर्तन में कठिनाई न हो। "[१]

गोविंददास के उपर्युक्त विचारो के अनुरूप पृथ्वीराज नाटक में भले ही दृश्यों की संख्या अधिक हो तो भी वह संक्षिप्त और कथानक के अनुकूल है , जिसका परिवर्तन आसानी से किया जा सकता है।

पृथ्वीराज नाटक में दूसरे अंक का चतुर्थ दृश्य पर्वतीय क्षेत्र का है। जो आसानी से रंगमंचपर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। लेखक ने इसका कोई निर्देश भी नहीं दिया है । आप लिखते हैं -

" स्थान - गोद्वार का पर्वतीय क्षेत्र

(रात्रि का समय है। पृथ्वीराज अपने पांच अश्वारोही के साथ एक पहाडी मार्ग से जा रहा है। मार्ग के दक्षिण पार्श्व में घना जंगल है और उत्तरी

---

१) नाटय कला मीमांसा - पृष्ठ, ३२

पार्श्व में कुछ दूर तक नंगी पहाडियाँ उंची - नीची उठी दृष्ठिगोचर होती है ---- [१])

इस दृश्य को रंगमंचपर दिखाना बडा कठिन है। इसके बाद के दृश्य मे राणा सांगा के मस्तकपर काला सर्प फन की छाया करके खडा है। पहले अंक के चतुर्थ दृश्यमें " नगर के बाहर हरी फसल के पास एक बरगद के नीचे ग्रामीण लोगों का मेला। कुछ स्त्री पुरूष सामुहिक नृत्य और गान कर रहे है। " [२] इन दृश्यों को दिखाने के लिए निर्देशक को रंगमंच के अनुरूप परिवर्तन करने की आवश्यकता है। निर्देशक नाटक को प्रदर्शित करते समय रंगमंच के अनुरूप परिवर्तन करने का अधिकार रखता है। इस नाटक के रंगमंच निर्देश में कुछ परिवर्तन करके उसे दिखाया जा सकता है। जैसे - दूसरे अंक का चतुर्थ दृश्य - रंगमंच पर पांच घोडों को लाने की अपेक्षा उनके टापों की आवाज पर्दे के पीछे से सुनाई जा सकती है।

रंगमंच की स्वाभाविकता तथा अभिनय को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए नाटककार को दृश्य योजना, रंग संकेत,प्रकाश योजना तथा संगीत स्वर की योजना करनी पडती है। अभिनय के लिए हाव भाव के संकेत देने पडते है। स्थान , समय और कार्य की ओर पुर्ण ध्यान देना आवश्यक होता है। अत: इस दृष्ठिसे पृथ्वीराज नाटक में रंगमंच तथा अभिनय के लिए निर्देश दिये गए है। जैसे - आवेग से, गंभीरता से, क्रोध से, आवेश के साथ, गम्भीर होकर आदि रंगसंकेत दिये गये हैं। निर्देशक संगीत को कथा के अनुरूप रख सकता है। नाटककार ने स्थान स्थानपर रंगमंच सम्बधी निर्देश दिए है, जिससे आसानी से मंचसज्जा में स्वाभाविकता आ सकती है। पंछियों का स्वर, वीणा के झंकार , ढोलक की आवाज, वाद्ययंत्रों की ध्वनियाँ, घुघरू और पायल की झंकार, देवी पंछी की बोली, रण का कोलाहल- आदि ध्वनिसंकेत भी दिए है। अत: पृथ्वीराज

---

१) पृथ्वीराज , पृष्ठ ५४
२) वहीं पृष्ठ , २२.

नाटक की कथा को लेखक ने रंगमंच के अनुरूप बनाने का प्रयास किया है।

पात्र योजना :

रंगमंच की दृष्टि से नाटक को सफल बनाने के लिए नाटककार को पात्रों के सम्बध में दो बातो का विशेष ध्यान रखना होता है। एक पात्रो की संख्या और पात्रों की प्रवृत्ति समान न हो। पृथ्वीराज नाटक में प्रमुख तथा गौण पात्रों की संख्या करीबन ३७ - ३८ तक है। जिसमें चार स्त्री पात्रों को छोडकर सभी पुरूष पात्र ही है। स्त्री पात्रों में केवल तारा ही एकमात्र प्रमुख नारी पात्र तथा नाटक की नायिका है। पुरूष पात्रों में महाराणा रायमल तथा उनके तीन पुत्र , राव सुरताण और सूरजमल प्रमुख पात्र तथा अन्य सभी गौण पात्र है। भले ही पात्रों की संख्या अधिक हो, लेकिन कथा ऐतिहासिक होने से वह असंगत नही लगते। नाटककारने पात्रों की वेशभूषा का कोई उल्लेख नहीं किया है, फिर भी ऐतिहासिक पात्रों के अनुरूप वेशभूषा उपयुक्त होगी।

सभी पात्रों के स्वभाव भी अलग अलग है महाराणा रायमल शांतिप्रिय, पृथ्वीराज साहसी तथा वीर, जयमल निराश, तारा लक्ष्मी और दुर्गा का अवतार, सूरजमल षड्यंत्रकारी, सुरताण आशावादी तो संग्रामसिंह परम्परावादी है। इससे स्पष्ट होता है, कि नाटककारने पृथ्वीराज़ नाटक की पात्र योजना रंगमंच की दृष्टि से ही की है। इसकी स्वीकृति भूमिका मे आपने दी है - " नाटक रंगमंच की वस्तु है। अत: मैने यथास्थान दृश्यों का आयोजन एवं घटनाओं तथा चरीत्र चित्रण अभिनय कला को ध्यानमें रखकर किया है।" [१]

" पात्रों की संख्या अधिक होने के कारण चरित्र चित्रण का पूर्ण विकास नही होता। " [२] गोविंददास के इन विचारों के अनुरूप पृथ्वीराज नाटकमें कुछ प्रमुख पात्रों को छोडकर अन्य पात्रों का चरित्र चित्रण पूर्ण रूपसे नहीं हुआ है।

---

१) पृथ्वीराज - भूमिका, पृष्ठ ७
२) नाटय कला मीमांसा - पृष्ठ , २४.

कथोपकथन :

नाटक कथोपकथन के द्वारा ही लिखा जाता है। अतः नाटक की सफलता कथोपकथन पर ही निर्भर है। रंगमंच की दृष्टि से अभिनय के लिए नाटक के संवाद अभिनेयता में सहायता देनेवाले हो। पृथ्वीराज नाटक के कथोपकथन में यह विशेषता है। साथ ही उसमें तिरस्कार, घृणा, आवेश, गंभीरता आदि का भी चित्रण है। नाटक के कथोपकथन कथा को रंगमंचपर प्रस्तुत करने में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करते ।

भाषाशैली :

नाटक की भाषा पात्रानुकूल होना आवश्यक है , साथ ही वह अभिनय करने में स्वाभाविक हो। भाषा के द्वारा ही दर्शकपर प्रभाव डाला जा सकता है और पृथ्वीराज नाटकमें नाटककार ने इस बातकी ओर अधिक ध्यान दिया है। पात्रानुकूल भाषा की अपेक्षा वे प्रभावशाली भाषा का प्रयोग केवल रंगमंच सुविधा के लिए ही किया है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से " पृथ्वीराज " नाटक के रंगमंच तथा अभिनय के बारे मे यही कहा जा सकता है, कि नाटककारने इसमें रंगमंच की दृष्टि से सारी सुविधा करने का प्रयास किया है। इसके लिए कुशल निर्देशक की आवश्यकता है , जो इसे रंगमंचपर आसानी से प्रदर्शित कर सके। " पृथ्वीराज " रंगमंच की दृष्टि से डॉ. दिनेश जी की सफल नाटय कृति मानी जा सकती है।

.....

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR